MP Board Class 7th Notes Sanskrit Chapter 21 सूक्तयः

सूक्तयः हिन्दी अनुवाद

1. आचारः परमोधर्मः।
2. संसर्गजाः दोषगुणाः भवन्ति।
3. उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।
4. हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः।।
5. उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः।
6. अति सर्वत्र वर्जयेत्।
7. विनाशकाले विपरीतबुद्धिः।
8. न कूपखननं युक्तं प्रदीप्ते वह्निना गृहे।
9. आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्।
10. क्षीयन्ते खलु भूषणानि सततं वाग्भूषणं भूषणम्।

अनुवाद :

1. आचरण सबसे बड़ा धर्म है।
2. संगति से दोष भी गुण हो जाया करते हैं।
3. उदार चरित्र वाले लोगों के लिए तो सारी पृथ्वी ही कुटुम्ब के समान होती है।
4. हितकारी और मनोहारी वचन दुर्लभ होते हैं।
5. परिश्रम करने से ही कार्य हुआ करते हैं, इच्छाओं से नहीं।
6. किसी काम की अति सभी जगह रोक लेनी चाहिए।
7. जब विनाशकाल आता है, तो बुद्धि भी उल्टी हो जाती है अर्थात् मनुष्य का आचरण भी विपरीत होने लगता है।
8. घर में आग लगने पर कुएँ का खोदना उचित नहीं होता है।
9. जो काम अपने लिए विपरीत हो, वह दूसरों के लिए नहीं करना चाहिए।
10. आभूषण तो नष्ट हो जाते हैं परन्तु वाणी का आभूषण सदा आभूषण रूप में बना रहता है।

सूक्तयः शब्दार्थाः

उद्यमेन = मेहनत से। संसर्गजाः = साथ रहने से। प्रदीप्ते = जलने पर। कूपखननं = कुआँ खोदना। आत्मनः = अपने। क्षीयन्ते = नष्ट हो जाते हैं। भूषणानि = गहने।